पाठ 15
शहीद की माँ

● योगेश चन्द्र शर्मा

आइए, सीखें :	अमर शहीदों के देश प्रेम, साहस व शौर्य से परिचय। सरल, मिश्र व संयुक्त वाक्यों का सामान्य ज्ञान ।

स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्रांतिकारियों को अँग्रेजों से लड़ने के लिए हथियारों की आवश्यकता थी। हथियार खरीदने के लिए उन्हें धन चाहिए था। इस कार्य के लिए वे भारतीयों से धन लेने की अपेक्षा ब्रिटिश सरकार का खजाना लूटना श्रेयस्कर समझते थे। क्रान्तिकारियों के जासूसों ने उन्हें सूचना दी कि अमुक तारीख को अमुक ट्रेन से सरकारी खजाना दिल्ली जाएगा। क्रांतिकारियों ने उस खजाने को लूटने की योजना बना ली। क्रान्तिकारियों के दल ने काकोरी नामक स्थान पर ट्रेन को रोका और खजाना लूट लिया। रामप्रसाद बिस्मिल इस योजना में सम्मिलित थे। अँग्रेजों ने अपना जाल फैलाकर उन्हें तथा उनके कुछ अन्य साथियों को पकड़ लिया। 'बिस्मिल' को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी के एक दिन पहले उनकी माँ उनसे मिलने जेल में पहुँची। बिस्मिल अपनी माँ से मिलना नहीं चाहते थे। उन्हें भय था कि कहीं उनसे मिलकर माँ का हृदय द्रवित न हो जाए किन्तु क्रान्ति वीर 'बिस्मिल' की माँ का हृदय तो चट्टान की भाँति कठोर था। उन्हें गर्व था कि उनका बेटा भारत माँ को स्वतंत्र कराने के प्रयास में फाँसी पर झूलने जा रहा है। देशभक्ति से सराबोर उस त्यागमयी माँ ने अपने लाल को भारत-माता की बलिवेदी पर बलिदान कर दिया। असीम देशभक्ति, साहस, वीरता की भावना से सपूत को आशीर्वाद दिया और उससे हँसते-हँसते विदा ली। धन्य है वह माँ जिसने अपने लाल को भारत-माता की बलि वेदी पर बलिदान कर दिया। असीम देशभक्ति, साहसऔर वीरता की भावना से ओतप्रोत माँ और पुत्र का वार्तालाप इस एंकाकी में पढिए-

(जेल की कोठरी का दृश्य। रामप्रसाद 'बिस्मिल' सींखचों के पीछे, इधर-उधर घूमते हुए मस्ती से गा रहे हैं।)

''सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।
सिर्फ मिट जाने की हसरत, इक दिले बिस्मिल में है।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा, गैर की महफिल में है।''

(गीत की समाप्ति के साथ ही जेलर प्रवेश करता है। जेलर भारतीय है। रामप्रसाद बिस्मिल के प्रति उसकी आँखों में अपनापन है।)

शिक्षण संकेत -
♦ पाठ प्रारंभ करने से पूर्व एकांकी की कथावस्तु कहानी के रूप में सुनाएँ। ♦ बच्चों को पात्र के रूप में खड़ा करके अभिनयपूर्ण ढंग से संवाद बोलने हेतु कहें । ♦ संवादों के उतार चढ़ाव तथा, भावपूर्ण उच्चारण पर बल दें।

जेलर – (प्रवेश करते हुए) पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल !

बिस्मिल – (मुस्कुराते हुए जेलर की तरफ देखकर) जेलर साहब ! फरमाइए क्या बात है?

जेलर – तुमसे कोई मिलने आया है।

बिस्मिल – मुझसे मिलने? कौन आया है?

जेलर – तुम्हारी माँ है।

बिस्मिल – (प्रसन्नता से) मेरी माँ! (कुछ सोचकर अचानक उदास हो जाता है।) लेकिन ....! नही, नही, जेलर साहब! मैं अपनी माँ से नहीं मिल सकूँगा।

जेलर – (आश्चर्य से) यह तुम क्या कह रहे हो? माँ से क्यों नहीं मिल सकोगे?

बिस्मिल – जेलर साहब, अपनी माँ से नहीं मिल पाऊँगा।

जेलर – लेकिन क्यों? कल तुम्हें फाँसी होने वाली है। और तुम आखरी बार अपनी माँ से बिदा भी नहीं लोगे?

बिस्मिल – मजबूर हूँ जेलर साहब। केवल एक दिन की मेरी इस जिंदगी को देखकर माँ को कितना दु:ख होगा, इसे आप नहीं जान सकते। मुझे डर है कि माँ की भीगी आँखें कहीं मेरे कदमों को डगमगा न दें, मुझे मेरी मौत के लिए अफसोस न होने लगे।

जेलर – (व्यंग्य से) इसका मतलब हुआ कि तुम्हें अपने आप पर भरोसा नहीं।

बिस्मिल – ऐसा न कहिए जेलर साहब। मैं चट्टान की तरह अटल हूँ। ईश्वर को अर्पित किए गए किसी फूल की मुस्कान मेरी रग-रग में है। लेकिन तब भी जेलर साहब, माँ से मिलने की हिम्मत मैं नहीं जुटा पा रहा हूँ। क्षमा चाहता हूँ। माँ से भी मेरी ओर से क्षमा माँग लेना, मैं उनसे नहीं मिल सकूँगा।

(यकायक रामप्रसाद बिस्मिल की वृद्धा माँ प्रवेश करती है। साधारण वेशभूषा।)

माँ – (प्रवेश करते हुए) क्या कह रहा है रामप्रसाद? माँ से नहीं मिलेगा? मुझसे नहीं मिलेगा तू? जरा एक बार मेरी ओर देखकर कहना तो सही।

बिस्मिल – (आश्चर्य से) माँ? तुम ....?

माँ – हाँ, मैं ही तो हूँ। क्या अपनी माँ को पहचान भी नहीं सकता?

बिस्मिल – ऐसे मत बोलो माँ।

माँ – और क्या बोलूँ, अपने देश का ऐसा दीवाना बना कि जन्म देने वाली अपनी माँ को भी भूल गया? मुझसे मिलने को भी तेरा जी नहीं चाहता।

बिस्मिल – मुझे गलत मत समझो माँ। मेरा मतलब यह नहीं था। मैंने तो.... ।

माँ – (बात काटकर स्नेह से) अब रहने भी दे अपनी सफाई। मैं सब जानती हूँ। तू अपनी माँ को भले ही भूल जा, पर मैं अपने बेटे रामप्रसाद को खूब जानती हूँ। तूने सोचा होगा कि तुझे इस हाल में देखकर मुझे शायद दुःख होगा। तुझे मौत की गोद में देखकर मेरी आँखों से परनाले बहने लगेंगे।

बिस्मिल – हाँ माँ। मेरा मतलब यही था।

माँ – मैं सोच भी नहीं सकती बेटा कि तुझसे अपनी माँ को पहचानने में भूल हो सकती है! कैसे भूल गया कि मैं रामप्रसाद बिस्मिल की माँ हूँ। जिस भारत माँ के लिए तू कुर्बान हो रहा है, वह अकेले तेरी ही माँ नहीं, वह तो मेरी भी माँ है, तेरे बुजुर्गों की माँ है, इस सारे देश की माँ है।

बिस्मिल – (भावावेश में) मैंने समझा था माँ कि ..... ।

माँ – अन्य साधारण स्त्रियों की तरह मैं भी रोने -चीखने लगूँगी। तूने यह क्यों न सोचा कि जिस माँ ने तुझे बचपन से त्याग, वीरता और देश-प्रेम का पाठ पढ़ाया है, वह आज अपनी मेहनत को फलते-फूलते देखकर फूली न समायेगी। आज का दिन मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी का दिन है।

बिस्मिल – मुझे अपने विचारों के लिए अफसोस है माँ!

माँ – नहीं मेरे लाल! आज के दिन किसी का अफसोस न कर। तू कुर्बानी की राह पर जा रहा है, मेरे बच्चे! अफसोस मुझे है कि मेरा दूसरा बेटा अभी छोटा क्यों है?

बिस्मिल – विश्वास रखों माँ। तुम्हारे इस बेटे के बलिदान से अनेक रामप्रसाद पैदा होंगे। वह दिन दूर

नहीं है, जब हमारा देश गुलामी के चंगुल से मुक्त होगा, लहलहाती जमीन हमारी अपनी होगी।

माँ – कितना शुभ होगा वह दिन?

बिस्मिल – हाँ माँ। (कुछ ठहरकर) माँ! एक इच्छा है।

माँ – बोल बेटे! बोल! क्या इच्छा है? मैं तेरी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करूँगी।

बिस्मिल – जब आजादी का पहला जश्न मनाया जाए, मेरी तस्वीर को ऐसी जगह रख देना, जहाँ से मैं सारा जश्न उस तस्वीर के जरिए देख सकूँ, लेकिन मेरी तस्वीर को कोई न देख सके।

माँ – ऐसा क्यों मेरे लाल? मैं तेरी तस्वीर को ऐसी जगह रखना चाहती हूँ जहाँ से सारी दुनियाँ उसे देख सके।

बिस्मिल – नहीं माँ! ऐसा मत करना। मेरी तस्वीर को देखकर लोगों को मेरी याद आ जाएगी। उनकी आँखे गीली हो जाएँगी। मेरे देश को आजादी मिले और मेरे देशवासी उस दिन आँसू बहाएँ, यह सहन नहीं हो सकेगा माँ!

माँ – (भावावेश में) जैसा तू चाहता है, वैसा ही होगा बेटे।

जेलर – (घड़ी देखते हुए) क्षमा कीजिए। समय काफी हो चुका।

माँ – (अपनी साड़ी के पल्लू में बँधे हुए कुछ बेसन के लड्डू निकालती है) ले बेटा! ये बेसन के लड्डू तेरे लिए बनाकर लाई हूँ। माँ के हाथ का यही अंतिम भोग है तेरे लिए!

बिस्मिल – (आश्चर्य से) बेसन के लड्डू?

माँ – हाँ! तुझे बेसन के लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं ना?

बिस्मिल – (हिचकिचाते हुए) लेकिन माँ.....

(बिस्मिल जेलर की तरफ देखता है। जेलर मुस्कराकर स्वीकृति देता है।)

माँ – (मुस्कराकर) चिन्ता न कर। जेलर साहब से मैंने पूछ लिया है।

बिस्मिल – तो फिर लाओ माँ। अपने हाथ से खिला दो। (प्रसन्नचित्त माँ बिस्मिल को लड्डू खिलाती है।)

बिस्मिल – बस माँ! बचे हुए लड्डू मैं बाद में खा लूँगा। (लड्डू लेकर अपने पास रख लेता है।)

माँ – (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरते हुए) अच्छा मेरे लाल! चलती हूँ।

बिस्मिल – अच्छा माँ! ईश्वर करे अगले जन्म में भी तुम ही मेरी माँ बनो।

माँ – और फिर मैं तुझे इसी तरह कुर्बान करूँ। पाल-पोसकर बड़ा करूँ और और ....

(गला रूँध जाता है।)

बिस्मिल – (आश्चर्य से) यह क्या माँ? तुम्हें अचानक क्या हो गया?

माँ – (जबर्दस्ती हँसते हुए) कुछ नहीं बेटा! कुछ भी तो नहीं।

बिस्मिल – तो फिर तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों छलक आए?

माँ – उन्हें छलकने दे! उनकी चिन्ता क्यों करता है?

बिस्मिल – नहीं माँ! बिदा की बेला में तुम्हारी आँखों में चमकने वाले ये आँसू.... मेरे कदमों को डगमगा रहे हैं।

माँ – (आश्चर्य और दु:ख से) रामप्रसाद! यह क्या कहता है? जन्मभूमि पर न्यौछावर होने वाले बहादुर इस तरह की बातें नहीं करते। संसार की कोई भी शक्ति उनके कदमों को नहीं डगमगा सकती।

बिस्मिल – मैं अब तक अडिग हूँ माँ! लेकिन तुम्हारी आँखों से बहने वाले दर्द को मैं सहन नहीं कर सकता। तुम दु:खी रहोगी माँ तो मेरी आत्मा भी दु:खी रहेगी।

माँ – तेरी कुर्बानी पर दु:ख... वह भी मुझे? यह तू क्या कह रहा है बेटा?

बिस्मिल – मैं नही कह रहा माँ! तुम्हारी आँखों से बहने वाले आँसू कह रहे हैं कि तुम्हें कोई दु:ख है।

माँ – (हँसकर) पगले! ये आँसू खुशी के आँसू हैं।

बिस्मिल – खुशी के आँसू!

माँ – हाँ बेटा। पाल-पोसकर अपनी संतान को अपने हाथों से देश के लिए कुर्बान कर देने में भी एक अजीब-सी खुशी है, उस खुशी को प्राप्त करने का गौरव मुझे मिल रहा है।

बिस्मिल – .... मैंने तो समझा था माँ कि ....।

माँ – अब रहने भी दे। (जेलर की ओर मुख कर)जेलर साहब, अपने बेटे की फाँसी के समय क्या मैं कल यहाँ रह सकती हूँ?

जेलर – नहीं। मजबूर हूँ मैं। हुक्म नहीं है।

बिस्मिल – जरूरत भी क्या है माँ? तुमने अपने बेटे को भारत माँ की गोद में डाल दिया। अब उसकी सेवा के लिए, यह आत्मा किसी भी रूप में रहे। क्या फर्क पड़ता है?

माँ – तू ठीक कहता है मेरे लाल! अपनी भारत माँ की अच्छी तरह सेवा करना। कोई चूक न होने पाए। (बिस्मिल के सिर पर हाथ फेरती है। बिस्मिल माँ के पैर छूता है।) चलिए जेलर साहब! (जेलर के साथ प्रस्थान करती है। बिस्मिल उस तरफ देखता रहता है। पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।)

नए शब्द

सरफरोशी = बलिदान देना, सिर कटाना । **तमन्ना** = इच्छा। **बाजु-ए-कातिल** = कातिल के हाथ में। **फरमाना** = बताना। **यकीन** = विश्वास। **दीवाना** = पागल, सनकी, पूरी तरह समर्पित । **भावावेश** - भावना के जोश में **जश्न** = जलसा, उत्सव। **प्रस्थान** = जाना, गमन, रवाना।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(क) सही जोड़ी बनाइए -

नहीं जेलर साहब	-	उनकी आँखें गीली हो जाएँगी।
मुझसे मिलने को भी	-	मैं अपनी माँ से नहीं मिल सकूँगा।
ईश्वर करे अगले जन्म में भी	-	तेरा जी नहीं चाहता ।
मेरी याद आ जाएगी	-	तुम ही मेरी माँ बनो।

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

(अ) बिस्मिल को .... की सजा हुई थी। (फाँसी /उम्रकैद)

(ब) जेलर .... था। (अंग्रेज/भारतीय)

(स) बिस्मिल की माँ अपने .... के लिए बेसन के लड्डू लाई थी। (बेटे/जेलर)

(द) बिस्मिल ने माँ से कहा "माँ, तुमने अपने बेटे को .... की गोद में डाल दिया है।" (भारत माँ/अँग्रेज सरकार)

2. **अति लघु उत्तरीय प्रश्न-**

(अ) रामप्रसाद बिस्मिल से जेल में कौन मिलने आया था?

(ब) माँ ने बिस्मिल को कौन सा पाठ पढ़ाया था?

(स) बिस्मिल ने अपनी माँ के सामने कौन सी इच्छा प्रकट की?

(द) बिदा होते समय बिस्मिल से माँ ने क्या कहा?

(ई) जेलर किस स्वभाव का व्यक्ति था?

3. **लघु उत्तरीय प्रश्न-**

(अ) बिस्मिल अपनी माँ से क्यों नहीं मिलना चाहते थे?

(ब) बिस्मिल ने अपनी तस्वीर सबके सामने रखने से मना क्यों किया?

(स) बिस्मिल आजादी का जश्न किस रूप में देखना चाहते थे ?

(अ) माँ को किस बात से गौरव अनुभव हो रहा था?

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए–

क्रांतिकारी, खजाना, सराबोर, वार्तालाप, अफसोस, लहलहाती, स्वीकृति, न्यौछावर, अमुक

2. सही वर्तनी वाले शब्द को कोष्ठक में लिखिए–

भाँति	–	भाँती	–	भांति	( )
वेस भूषा	–	वेश भूषा	–	वेश भूशा	( )
स्वीक्रति	–	स्वीकरिती	–	स्वीकृति	( )
हिरदय	–	हरिदय	–	हृदय	( )

■ **ध्यान दीजिए–**

"बिस्मिल अपनी माँ से मिलना नहीं चाहते थे। उन्हें भय था कि कहीं उनसे मिलकर माँ का हृदय द्रवित न हो जाए। देश भक्ति से सराबोर माँ ने अपने सपूत को आशीर्वाद दिया और उसने हँसते–हँसते विदा ली।"

उपर्युक्त अवतरण में पहला वाक्य–"बिस्मिल अपनी माँ से मिलना नहीं चाहते थे" सरल वाक्य है।"दूसरा वाक्य–उन्हें भय था कि कही उनसे मिलकर माँ का हृदय द्रवित न हो जाए।" मिश्र वाक्य है क्योंकि इसमें एक प्रधान उपवाक्य है दूसरा आश्रित उपवाक्य है।

तीसरा वाक्य– "देशभक्ति से सराबोर माँ ने अपने सपूत को आशीर्वाद दिया और हँसते–हँसते विदा ली।" संयुक्त वाक्य है क्योकि इसमें एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा समानाधिकरण उपवाक्य है।

3. नीचे लिखे सरल,संयुक्त और मिश्र वाक्य पहचान कर उनके आगे लिखिए–

1. माँ से मेरी और से क्षमा माँगना, मैं उनसे न मिल सकूँगा। ____________
2. मैं अपनी माँ से नही मिलूँगा। ____________
3. मेरी इच्छा है कि तू मातृभूमि की रक्षा करे। ____________
4. मेरे देश को आजादी मिले और मेरे देशवासी उस दिन आँसू बहाएँ। ____________
5. जन्मभूमि पर न्यौछावर हाने वाले बहादुर इस तरह की बातें नहीं करते हैं। ____________

4. समानार्थी- शब्दों को रेखा खींचकर मिलाइए-

तमन्ना	-	हत्यारा
कातिल	-	अन्तर
कुर्बानी	-	सभा
हुक्म	-	बलिदान
महफिल	-	इच्छा
फर्क	-	आदेश

5. नीचे दिए गए शब्दों में यथास्थान ता, ई त्व, इय प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए-

सज्जन	....
गरीब	....
सुन्दर	....
व्यक्ति	....
ठग	....
मानव	....
नारी	....

■ इसे भी समझिए

श्रवणकुमार के माता-पिता नेत्र हीन थे। वह उनका लाड़ला पुत्र था। उसके माता-पिता उसे अंधे की लाठी मानते थे। लोग कहते हैं ऐसा पुत्र चिराग लेकर ढूँढने से भी नहीं मिलेगा। श्रवण कुमार अपने माता-पिता को सिर आँखों पर बैठाते थे। वह माता-पिता की आँखों का तारा था।

ऊपर लिखे अवतरण में रेखांकित शब्दों को ध्यान से देखिए। ये वाक्यांश सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ में प्रयुक्त हो रहे हैं-

अंधे की लाठी	-	एकमात्र सहारा
चिराग लेकर ढूँढना	-	कठिनाई से मिलना
सिर आँखों पर बैठाना	-	बहुत सम्मान करना
आँखो का तारा	-	बहुत प्यारा।

6. **नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-**

आँखें बिछाना
अपने पैरों पर खड़े होना, फूला न समाना
नौ दो ग्यारह होना, कदम डगमगाना
कमर सीधी करना, पत्थर की लकीर होना

अब करने की बारी

- ''सरफरोशी की तमन्ना'' गीत को कंठस्थ कीजिए और अपनी शाला में सुनाइए।
- शहीदों द्वारा गाए गए गीतों का संग्रह करके अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।
- इस एकांकी का अपने साथियों के यहयोग से कक्षा में अभिनय कीजिए।